कुरआने हकीम के सात अचम्भे

मौलाना सुहैल आफ़न्दी साहब क़िब्ला

कुरआन हकीम के जो अचम्भे अर्थात विचित्रतायें (अजाएब) अब तक प्रकट हो चुके हैं या आने वाले समय में जाहिर होंगे, उनकी गिनती का अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। इस ग्रन्थ के बारे में हमारे छठे इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) का यह इरशाद अपने आप में एक चमत्कार की हैसियत रखता है कि–

''इसके अचम्भे और अजाएब कभी समाप्त न होंगे।'' पिछली चौदह सदियों में मानव ज्ञान की प्रगति और सृष्टि के भेदों के अनावरण ने कुरआन की आयतों में सैकड़ों छुपे हुए अचम्भों (अज़ाएब) को जाहिर कर दिया है और यह सिलसिला आगे भी चलता ही रहेगा और खुद इस हकीम किताब में यह भविष्यवाणी मौजूद है–

''हम इंसानों को उनकी जानों और अन्य सृष्टि में अपनी निशानियां दिखाते रहेंगे। यहां तक कि इस किताब की सत्यता उन पर प्रकट हो जायेगी।(1)

पिछले 1400 वर्षों में इस इलाही इर्शाद की अर्थपूर्णता और सत्यता उज्जवल से उज्जवल होती रही है और कुरआन के अब तक के जाने माने अनगिनत ''अचम्भों से हम चुनाव की कोशिश बिना, बस 7 अचम्भे सम्मानित पाठकों की भेंट कर रहे हैं। इन अजाएब को कुरआन–ए–हकीम के ईश्वरीय वाक् (इलाही कलाम) होने की बौद्धिक तर्क भी माना जा सकता है।

1–ब्रह्याण्ड के फैलाव की निरन्तरता :

यह तथ्य अब प्रमाणित हो चुका है कि यह ब्रह्याण्ड अपने सकल स्वरूप में लगातार फैल रहा है और अनन्त भविष्य काल तक फैलता रहेगा। आज से 50 साल पहले तक इंसान सृष्टि सम्बन्धी इस तथ्य से अनभिज्ञ था और नक्षत्रों की ज़ाहिर गति से अलग ब्रह्याण्ड के सकल आयतन (हजम) को ठहरा हुआ और स्थायी समझता था परन्तु अब विज्ञान के छात्र ब्रह्याण्ड में फैलाव और वृद्धि की वास्तविकता से अवगत हो चुके हैं। देखने में यह ब्रह्याण्ड हमें फैलता हुआ नज़र नहीं आता लेकिन इस ज्ञान क्षेत्र के विद्वानों ने इस फैलाव की दशा की भी व्याख्या कर दी है और फैलाव की गति का भी लेखा जोखा कर लिया है। आलों उपकरणों, प्रेक्षण और मुशाहदे और उच्च गणित शास्त्र की रोशनी में इस फैलाव को जैसे अपनी आंखों से देख लिया है और अब यह फैलाव मात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं, महज़ एक साइंसी नज़रिया नहीं, बल्कि ऐसा ठोस यथार्थ है जिसे ज्ञान का भविष्य कभी रद नहीं कर सकता, कभी मेट नहीं सकता। अब निवेदन का सार मस्तिष्क में सुरक्षित रखें और जो इस आयत में कहा गया है उस पर ध्यान दें–

''इस वातावरण को हमने अपने अधिकार के हाथों से रचा है और हम ही इसको फैलाते रहे हैं। (2) इस चकित कर देने वाली आयत के भाषा कौशल और उसकी सार्थकता और सच्चाई सूरज से भी ज़्यादा दीप्तमान है। आज से 1400 साल पहले सृष्टि लोक का जो मुहबंद राज़ महान से महान विज्ञानी और बुद्धजीवी को जिसकी शंका

भी न हुई होगी वह कुरआन की एक आयत में साफ और खुले शब्दों से सृष्टा ने बयान कर दिया है। बुद्धि और न्याय वालों के लिये यह एक अकेली आयत कुरआन के दैवी वाक् होने का अकाट्य प्रमाण है।

2—प्रारम्भिक गति :

सृष्टि लोक के उपरोक्त और उसकी कैफ़ियत और चाल के दृष्टिगत मानव बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुंची कि यह समस्त द्रव्य जो करोड़ो सूरतों और स्थितियों में सृष्टि लोक में फैला नजर आता है और जिससे यह पुरा ब्रह्माण्ड समझ में आता है आज से अरबों शताब्दियों पहले एक ठोस जमे हुए पिण्ड की सूरत में इकट्ठा था। मतलब यह कि यह समूचा सौर मण्डल गतिमान और स्थिर नक्षत्र टूट्ने वाले तारे, पुच्छल तारे, आकाश गंगायें, अन्तरिक्ष और उसकी फैली हुई सान्सारिक धूल आज से करोड़ो शताब्दी पहले एक महान गेंद की सूरत में, एक महान पिण्ड की अवस्था में जमी हुई थी। कब से यह भयावह पिण्ड मौजूद था? कोई नहीं जानता प्रन्तु इतना अवश्य ज्ञात है कि खुदा जाने आज से कितने करोड़ साल पहले इस महान और भयावह पिण्ड में पहली गति पैदा हुयी और यह पिण्ड एक रहस्यमय धमाके के अन्तर्गत दरार पड़के फैलने लगा और उपरोक्त फैलाव इस धमााके का एक फल है। और सृष्टि लोक के सभी विधि विधान इसी सर्वप्रथम गति के कारण प्रचलित है। प्रथम गति हुई, धमाका हुआ, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन गति क्यों हुई? इसका कारण, बताने से शोधकारी असमर्थ हैं और इस गुत्थी को सुलझाने के लिये कोई दृष्टिकोण भी पेश करने का साहस नहीं किया है। खुली बात है कि यह तथ्य आज से 100 साल पहले अज्ञात था।

अतः आज से 1400 साल पहले इस तथ्य तक किसी मनुष्य के ज्ञान की पहुंच का प्रश्न ही नहीं उठता और अब ज़रा अपने मस्तिष्क महान को इस आयत की ओर आकृष्ट करें।

''क्या (ज़ात—ए—हक, ब्रह्य) का इन्कार करने वालों ने यह नहीं देखा कि ज़मीन आसमान एक दूसरे से जुड़े थे, मज़बूत तरीके से जमे हुए थे, इकट्ठा थे और हमने उन्हें फाड़ दिया।''(3)

आम तौर पर विज्ञानियों का मन मस्तिष्क, अज्ञानता के मोह, मूर्खता, संकुचित दृष्टि और प्रत्येक प्रकार के पक्षपात से शुद्ध होता है। अतः इस आयत का चमत्कार देखने के बाद उनके चिन्तन को अल्लाह पाक के सजदे में गिर जाना चाहिए लेकिन हमें तो अभी बहुत कुछ कहना है। आइये कि अब ''ईश्वरीय अन्दाज़ का एक और चमत्कार'' देखें।

3—तत्वों का आपसी संतुलन और अनुपातः

सृष्टि लोक में जो तत्व पाये जाते हैं और जिनके कर्मी करण और योग से ही यह सृष्टि लोक समझ में आता है उनकी गिनती सीमित है लेकिन इनसे बनने वाले यौगिकों की गिन्ती का घेर लेना और कुछ छूटने न देना सम्भव नहीं। सृष्टि लोक में प्रत्येक तत्व की सकल मात्रा अलग—अलग है। उदाहरण स्वरूप देखें—हाईड्रोजन सब से अधिक मात्रा में पायी जाती है और रेडियम, यूरेनियम आदि सबसे कम मात्रा में ओर यह आपसी अनुपात इतना युक्तिपूर्ण और सूक्ष्म है कि इस अनुपात व्यवस्था में जरा सी भी गड़बड़ी सृष्टि लोक को निलम्बित और जीवन को लुप्त कर सकती है। अगर वायुमण्डल में आक्सीजन की मात्रा अपने अनुपात से घट या बढ़ जाये तो जीवन समाप्त हो जाये। भूमण्डल में सोने की जो मात्रा है उसमें घटती बढ़ती संसार की आर्थिक व्यवस्था को मुद्दतों के लिए छिन्न—भिन्न कर सकती है। इस ढ़ंग की सैकड़ों नहीं, हज़ारों नहीं, करोड़ो मिसालें दी जा सकती हैं। इन सच्चाईयों को कोई भी बुद्धिमान और न्याय प्रिय आदमी संयोगों का संग्रह नहीं मान सकता। गणित विज्ञान के दक्ष विद्वान इस बात की पुष्टि करेंगे कि संभावना और धारणा के नियम के अन्तर्गत यह संयोगो का सिलसिला

बौद्ध रूप से असम्भव है और वास्तविकता भी यही है कि यह सब यथार्थ संयोग वश नहीं है बल्कि किसी शक्ति के अन्दाजें हैं और वह शक्ति इसकी घोषणा भी कर चुकी है।

''कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके भण्डार हमारे नहीं। यानी कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसकी हमारे पास कोई कमी हो। लेकिन हम उसे एक अन्दाजे के अनुसार ही उतारते हैं जो हमारे ज्ञान में है।''(4)

वैसे तो कुरआन में 14 आयतों पर ही सजदा करने का आदेश है और उनमें से भी बस चार पर सजदा वाजिब है लेकिन सच तो यह है कि हर विचारशील और चेतन व्यक्ति प्रत्येक आयत पर सजदा कर सकता है। यह आयत भी उन्हीं आयतों में से है कि अगरचे परिभाषिक रूप से सिजदे वाली आयतों में नहीं है लेकिन मन पुकारता है कि सृष्टि के सिजदे में गिर जाओ जिसकी सम्पूर्ण शक्ति ने इस अनुपात और संतुलन को बनाये रखा है। मैं नहीं समझता कि अब यहां किसी और टीका टिप्पणी की गुंजाइश है और अगर यह आयतें चमत्कार नहीं हैं तो फिर चमत्कार कहते किसे हैं?

4—सौर मण्डल का ऋजु रेखा (मुस्तकीम ख़त) में सफरः

हमारा सौर मण्डल अर्थात सूरज चाँद नवज्ञात गतिमान नक्षत्र और उनके अन्तर्गत और छोटे गतिमान ग्रहों का जमघट सामूहिक रूप में एक स्थित नक्षत्र की ऋजु रेखा में बढ़ रहा है। हमारे इस व्यवस्था का केन्द्र सूरज है जमीन और आठ ग्रह सूरज के गिर्द घूम रहे हैं और ग्रहों के गिर्द उनके अधीनस्थ उपग्रह चक्कर काट रहे हैं और सूरज अपने मण्डल के सभी घटकों को किसी गतिमान दशा में लिये हुए एक ऋजु रेखा में एक तारे की ओर बढ़ता चला जा रहा है। यह नक्षत्र सितारों के इसी झुरमुट में स्थिर है जिसे खगोलशस्त्रियों ने स्पेस का नाम दिया है।

सूरज और सौर मण्डल के घटकों की इस प्रगति की गति सीमा भी मालूम कर ली गयी है लेकिन यह कोई घबराने की बात नहीं है क्योंकि अभी लाखों साल तक सूरज के सितारे से टकरा जाने की, संभावना नहीं है। अतः यह सिद्ध है कि सूरज एक स्थिर नक्षत्र की ओर अपने अधीनस्थों को लिये चला जा रहा है। सूरज की इस गति की जानकारी को ''कोपरनिक्स'' को भी नहीं थी जिसने 15वीं सदी में मसीही में (बतली मूसी) व्यवस्था को ग़लत विद्ध किया। ''बतली मूस'' ने कहा था कि जमीन स्थिर है चांद सूरज उसके गिर्द घूम रहे हैं (''कोपरनिक्स'' ने कहा) और ठीक कहा बतलीमूस की सोच में चूक हो गयी है। सूरज केन्द्र में है जमीन उसके गिर्द घूम रही है परन्तु सौरमण्डल के ऋजु रेखा में यात्रा करने का हाल उस पर भी न खुल सका था। चकितकारी बात यह है कि कुरआन में इस सत्य की निशान्दही करने वाली एक स्पष्ट आयत मौजूद है। परन्तु कुरआन के भाष्यकारों का मस्तिष्क इस आयत में बताये गये ब्रह्माण्ड भेद तक न पहुंच सका और अगर कोई इंसान विधाता के इस मर्म का चौदह सौ वर्ष पहले अनावरण कर चुका हो तो क्या आप की बुद्धि उससे साधरण लोगों में शामिल रखेगी। और क्या आप यह मानने पर विवश नहीं हो जायेंगे कि यह साधरण व्यक्ति नहीं बल्कि विधाता का भेजा हुआ पैग़म्बर है? और मज़े की बात यह है कि यह हैरत अंगेज़ आयत उस बहुत पढ़े जाने वाले सूरे में है जिसे कुरआन न पढ़ने वाले भी बरकत के लिये पढ़ लेते हैं यानी सूरा यासीन जा कुरआने हकीम का 36 वां सूरा है, उसकी 38वें नम्बर वाली आयत में मालिक कहता है—

''और सूरज अपने ठहरने के स्थान की ओर चला जा रहा है। यह उस शक्ति सम्पन्न की बनाई व्यवस्था है जो बड़ा जानने वाला है।''

अब जी चाहता है कि बस इतना कह के आगे बढ़ जाया जाये कि कुरआने हकीम के ईश्वरीय वाक होने पर शक करने वालो। तुम

अपने पालने वाले की किन–किन निशानियों से विमुख रहोगे!

5–हमें सुरक्षित रखने वाली दिशाः

जमीन पर रोज़ाना लगभग दो करोड़ टूटे हुए तारे गिरते हैं लेकिन हमें उनके जमीन से टकराने की सूचना नहीं होती। इन टूटे हुए तारों का आयतन (हजम) एक क्रिकेट गेंद से लेकर छोटी पहाड़ियों तक होता है फिर भी हम उनकी ज़द से बचे रहते हैं। इसका कारण यह है कि जब आन्तरिक्ष से यह ग्रह ज़मीन की ओर बढ़ते हैं तो वायुमण्डल में प्रवेश करते ही इनमें वायुमण्डल की रगड़ के कारण आग लग जाती है और इसी नाते भूमि पर आते–आते रेज़ा–रेज़ा हो जाते हैं। यानी हवा का आवरण जो जमीन के इर्द गिर्द लिपटा हुआ है, हमें इन देवकाय आलों की जानलेवा मार से बचा लेता है। ज़रा सोचिये कि अगर यह वायुमण्डल न होता और इसमें पत्थरों को रेज़ा–रेज़ा कर देने की शक्ति न होती तो क्या मैं यह लिख सकता था और आप इसे इस समय पढ़ते होते! जी नहीं। जीवन कभी का समाप्त हो चुका होता और इंसानों, हैवानों और रेगिस्तानों के बजाये भूमण्डल पर सिर्फ पत्थरिस्तान होते। इसके अलावा इस वायुमण्डल के चारों ओर एक गैस का खोल है जिसे ओजोन, (प्रजारक) कहते हैं। इसका एक अणु ऑक्सीजन के तीन प्रमाणुओं का योग होता है। इस गैस में एक क्षमता यह है कि सूरज से निरन्तर निकलने वाली घातक किरणों को जिन्हें काएनाती शुआएं कहा जाता है। अपनी तहों में शोषित (जज़्ब) कर लेती है और जमीन तक नहीं पहुंचने देती। यह घातक किरणें जीवन में रूकावट और समाप्त कर देने वाली है अर्थात जीवन के लिये घातक और बाधक हैं। अगर वायुमण्डल के इर्द गिर्द यह ओजोन गैस का ग़िलाफ न होता तो यह मुहलिक काएनाती शुआंए ज़मीन तक पहुंचती और जीवन बना रहना असम्भव हो जाता यानी अभी तक हमें वायुमण्डल के दो उपकारों का ज्ञान हुआ है। हम यहां सांस लेने के फायदे को नहीं गिन रहे हैं। एक उपकार यह है कि हम को शहाबे साक़िब, (टूटे हुए तारों) की मार से बचा लेता है और दूसरा एहसान यह है कि हमें काएनाती शुआओं से सुरक्षित रखता है। आज से 1400 वर्ष पूर्व वायुमण्डल या वातावरण के इन उपकारों और फायदों का ज्ञान तो क्या गुमान तक न हुआ था, सरसरी विचार भी नहीं आया था और हमें यह जानकारी न थी कि यह वातावरण हमारी रक्षा करने वाली दिशा है। यद्यपि हमें विधाता ने यह भेद बता दिया था लेकिन हम कुरआन में चिन्तन, मनन के बजाये,'' बह्रे ज़ुलमात (अटलांटिक महासागर) में घोड़े दौड़ा रहे थे। अफ्रीका के सहरओं और यूरोप के कलीसाओं में अज़ानें दे रहे थे। कुरआन के यह अचम्भे सामने आते तो कैसे। ख़ैर इस आयत की गहराई और मज़बूत पकड़ की ओर ध्यान जाता तो कैसे? जिसका अनुवाद निम्न हैः–

''और हमने वातावरण को सुरक्षित दिशा बनाया है और यह ज़ाते हक़ (ब्रह्य) के न मानने वाले इस दशा की विचित्रताओं से मुंह मोड़ लेते हैं।''

और इहतियातन हम यह भी कहते चलें कि इस सुरक्षित दिशा के दो ही फ़ायदो का अभी तक ज्ञान हुआ है और आने वाले समय में जब मानव ज्ञान और प्रगति करेगा तो और कितने फ़ायदे सामने आयेंगे। इसे विधाता ही की बलंद और पाक ज़ात अच्छा और बेहतर जानती है। (5)

6–हर चीज़ में जोड़े पाये जाते हैंः

पहले आदमी यह समझता था कि जोड़ों यानी पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का अस्तित्व इन्सानों और हैवानों तक सीमित है लेकिन कुछ दिन बाद इंसान के ज्ञान और अनुभव ने बताया कि पेड़ पौधों और सभी वनस्पतियों में भी जोड़ों का अस्तित्व है और यही अस्तित्व उनके जीवन का कारण है। विज्ञान ने प्रगति की तो पता चला कि यह सिलसिला इंसान, हैवान और वनस्पति तक ही सीमित नहीं बल्कि

बिद्युत शक्ति में मुस्बत और मन्फी (धनात्मक और ऋणात्मक) का जोड़ा मौजूद है। चुम्बक में उत्तर ध्रुव के रूप में जोड़े विद्यमान हैं और प्रमाणु भी इलेक्ट्रान (ऋणात्मक ऊर्जा) और प्रोटान (धनात्मक ऊर्जा) पर सम्मिलित है और चूंकि सृष्टि लोक का सारा द्रव्य परमाणुओं से ही अभिप्राय है और तमाम परमाणुओं में जोड़े पाये जाते हैं, अतः हम खण्डन के डर के बिना यह कह सकते हैं कि जोड़ों का वजूद हर चीज़ में पाया जाता है और यही अल्लाह भी फरमाता है—

''पवित्र और पुनीत है वह ज़ात जिसने जमीन से उगने वाली सभी चीजों का और खुद इस (इंसानों) का जोड़ा पैदा किया और उन चीजों का भी जिनकी इन्हें ख़बर नहीं।(6)

मनन और चिन्तन करने वाले इस आयत के अर्थ वाकपटुता, गहराई, व्यापकता सार्थकता पर विचार और इस किताब को मात्र विश्वास की दृष्टि से नहीं बौद्धिक रूप से भी अल्लाह पाक का वाक् मान लें। उपरोक्त आयत के अन्तिम अंश की ओर मैं फिर आपका ध्यान आकृष्ट करूंगा। इसका अर्थ यह है कि ''हमने उन चीज़ों के जोड़े पैदा किये जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं आज से चौदह सौ साल पहले हमें ऊर्जा की धनात्मक और ऋणात्मक, और चुम्बक के उत्तर ओर दक्षिण ध्रुव और प्रमाणु के इलेक्ट्रान और प्रोटान की ख़बर नहीं थी और आज चौदह सौ वर्ष गुज़रने पर भी आयत के इस अंश की सच्चाई और वास्तविक्ता पर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि आज तक हम सब चीज़ों को जो सृष्टिलोक में पायी जाती है, घेर नहीं पाये हैं और खुदा ही अच्छा जानता है किन—किन चीज़ों के उसने जोड़े पैदा किये हैं और आज के हज़ारों वर्ष बाद भी जोड़ियों के बारे में आदमी का ज्ञान पूर्णता को प्राप्त न होगा और आयत के अन्तिम शब्द ''जिनकी उन्हें ख़बर नहीं'' ज्यों के त्यों अपना जलवा दिखाते रहेंगे।

7—फ़िरऔन के शरीर की सुरक्षाः

जातियों के इतिहास में मिस्र का आदि इतिहास सबसे अधिक दिलचस्प और आश्चर्यजनक है। मिस्र पर फ़िरऔनों के लगभग तीस परिवारों की सत्ता रही है। मिस्र के आदि इतिहास के ज्ञानियों ने आदि मिस्री लिखावट की जो प्रतीकों और तस्वीरों का मिश्रण है, पहेली सुझाा कर मिस्र के आदि इतिहास को संकलित किया है और कई विवरणों के बारे में इन ज्ञानियों ने भेद किया है। कुछ कहते हैं कि वह ''फिरऔन'' जो हज़रत मूसा (अ०) के सामने आया था उसका नाम मेनफताह था और कुछ का विचार था कि वह 18वीं नस्ल का फिरऔन था जिसका नाम ''राअ् मसीस (द्वित्तीय)'' था। बहरहाल हमें इससे मतलब नहीं कि उसका नाम क्या था। हमें तो आप का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना है कि आज से कुछ सदी पूर्व किसी इतिहासकार ने यह सोचा तक न होगा कि फ़िरऔनो और मिस्र के दूसरे सामन्तों की लाशें शवलेपन (हुनूत) करके अहराम (समाधिस्तूप) में सुरक्षित कर दी जाती थी। इन्हें ममी का नाम दिया गया है। जब मिस्र के पुराने इतिहास के अनुसंधान के सिलसिले में खुदाई का कार्य बड़े पैमाने पर मुद्दतों तक जारी रहा तो पता चला कि कितने ही फ़िरऔनो और सामन्तों की लाशें आज तक सुरक्षित हैं। यह लाशें हज़ारों वर्ष पुराने मकबरों में से निकाल कर अजायबघरों की शोभा बना दी गयीं। कितनी ही लाशें निकाली जा चुकी है और कितनी ही उन डरावनी और भेदपूर्ण उलझी हुई भूलभुलैया जैसी क़ब्रगाहों में अब भी छिपी हुई है और उस ''फिरऔन'' की लाश काहिरा के म्युज़ियम में मौजूद है, जिसकी चर्चा हज़रत मूसा के सिलसिले में कुरआन में आयी है और इंसानों के लिए सीख का साधन बनी हुयी है। मिस्र के इतिहास की इन सच्चाइयों का ज्ञान आज से कुछ शताब्दी पहले किसी को न था परन्तु कुरआन आज से 1400 साल पहले इस यथार्थ की ओर साफ

संकेत कर चुका था। सूरे यूनुस कुरआने हकीम का दसवां सूरा है (इसकी 90,91,92 वीं आयतें पढ़ें) हज़रत मूसा (अ०) और फ़िरऔन से सम्बन्धित घटनायें बयान की जा रही हैं। जब फ़िरऔन डूबने लगता है और देखता है कि पानी सर से ऊपर ऊंचा हो रहा है तो ईमान लाने की स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है। कोई अन्य उपाय न होने और विवशतापूर्वक ईमान लाने की घोषणा के जवाब में इरशाद होता है–''अब (मौत को सामने देख के) ईमान ला रहा है। हाँलांकि इससे पहले अवज्ञा कर चुका है और तू तो फसादियों में से था। बस आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे ताकि तु आने वाली (पीढ़ियों) के लिए (नमूना) और सीख का कारण बन जाये और इसमें कोई सन्देह नहीं बहुतेरे लोग हमारी निशानियों से अनभिज्ञ हैं।''

हमारा विचार है कि उपरोक्त आयत की चमत्कारिता और ऐजाज़नुमाई पर हमें कोई टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन आयतों की चमत्कारिता सूरज से ज्यादा दीप्तिमान है। अन्तिम अंश पर एक बार फिर ध्यान दें। ''बहुतेरे इंसान हमारी आयतों से अनभिज्ञ हैं।'' 1400 साल पहले भी यही परिस्थिति थी और हज़ारों निशानियाँ सामने आ जाने के बाद भी यही परिस्थिति है कि हम अपने पालने वाले की निशानियों से अनभिज्ञ हैं।

कुरआने हकीम के कुछ चमत्कार प्रस्तुत करने का यह एक बहुत छोटा सा प्रयास है। ''हक तो यह है कि हक़ अदा न हुआ'' बहरहाल अब समय आ गया है कि इस दृष्टिकोण से कुरआन का वैचारिक अध्ययन किया जाये और ''जिसने पहुंचाया –––''के निर्देशानुसार इसकी चमत्कारिता और वाकपटुता को अन्य जाति के सामने प्रस्तुत किया जाये ताकि इसको ईश्वरीय वाक् मानने का थोड़ा हक़ अदा हो सके। मुखरित कुरआन यानी परहेज़गारों और संयमयों के सरदार हज़रत अली अ0 ने नहजुलबलाग़ा के एक व्याख्यान में कुरआन के 42 गुण गिनाये हैं। हम उन में से निम्नलिखित के बयान पर अपने इस निबन्ध को असफलता की अनुभूति के साथ समाप्त करते हैं। हज़रत फरमाते हैं कि ''यह कुरआन वह समन्दर है जिसकी गहराई का अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता, वह किरण है जिसकी चमक कभी मन्द नहीं पड़ेगी। यह कुरआन धर्मज्ञानियों की प्यास बुझाने की सरिता और धर्मविधिवेत्ताओं के मनों पर बहार है।''

हाशिये–

1–सूरा 41, आयत 53 2–सूरा 15, आयत 47
3–सूरा 21, आयत 30 4–सूरा 15, आयत 21
5–सूरा 21 आयत 32 6–सूरा 36, आयत 36



(पेज नं0 6 का शेष)

कुछ गिनती इस तरह तय (निश्चित) कर ली कि रमज़ान महीना 30 दिन, शव्वाल 29 दिन, ज़ीक़ाद 30 दिन, जिल्हिज़्जा 29 दिन।

इसी तरह एक महीना 30 का और एक महीना 29 का । ये लोग '' अस्हाबुल अ़दद'' (अंक वाले) कहे जाते हैं। दूसरे ओलेमा और देखने के मुताबिक़ दसूरी क़िस्म की हदीसों पर चले। ये लोग ''अस्हाबुर्रुया'' (देखने वाले यानी देखने के पक्षधर) कहे गए। तीसरी चौथी सदी हिजरी तक ये फ़र्क़ बहुत ज़ोरों पर था और आपस में एक दूसरे की ख़िलाफ़ रेसाले भी लिखे गये लेहाज़ा बहुत से रेसाले इस टॉपिक पर मैं हमारी जानकारी में मौजूद हैं। मग़र बाद में ये मतभेद मिट गया और तमाम उलमा–ए–शीया इस बात के क़ायल (मानने वाले) नज़र आने लगे कि गिनती का कोई भरोसा नहीं। अस्ल भरोसा चाँद का है। यही अब भी सभी फ़िरकों के नज़रिए से सही हैसियत रखता है। इतना तो यक़ीन कर लिया गया है कि पहली क़िस्म की हदीसों पर चला नहीं जा सकता मगर आज तक उन हदीसों का दिल में बैठ पाने वाला मतलब समझ में नहीं आया।

